एम० ए० प्रथम वर्ष

द्वितीय प्रश्न पत्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास

द्वितीय सेमेस्टर

विषय: हिन्दी कहानी की प्रमुख विधाये:

प्रथम विधा- "कहानी"

व्याख्याता :-

डॉ० मंजू शुक्ला सहायक आचार्य

हिन्दी संकाय

N.G.B.D.U. PRAYAGRAJ

हिन्दी कहानी की प्रमुख विधाएँ :-

हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास :→

हिन्दी गद्य विधाओं में सबसे महत्वपूर्ण विधा के रूप में उदित हुई। आधुनिक 'कहानी' शब्द अंग्रेजी के 'short story' शब्द का पर्याय है। विगत एक-डेढ़ सौ वर्षों में विश्व साहित्य की एक महत्वपूर्ण कला रूप की दृष्टि से सर्वाधिक विकास हुआ है। यद्यपि कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति मानव-मात्र में सभ्यता के सूर्योदय से ही बलवती दिखायी देती है। मनोरंजन और संस्कार सिंचन की दृष्टि से कहानी का कोई विकल्प विश्व समाज में उपलब्ध नहीं है। आदिमानव में विस्मय और भय दोनों की मात्रा अधिक थी। परियों, राक्षसों, एवं बैतालों की कहानियों की रचना उपर्युक्त प्रवृत्ति का ही परिणाम है। हमारे यहाँ बृहत्कथा, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर, हितोपदेश आदि कथाओं तथा पाश्चात्य की पौराणिक दन्तकथाओं, नीति तथा वीरगाथाओं में विपुल कथा सम्पत्ति के दर्शन होते हैं। किन्तु वर्तमान कहानी इस पुरानी अथवा पौराणिक कहानी से सर्वथा अलग और स्वतंत्र है।

आज हमारे कथा – साहित्य के प्रमुख दो अंग है-
- कहानी
- उपन्यास

प्रारम्भ में तत्वगत विशेषता के आधार पर दोनों को एक माना जाने लगा किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। ये दोनों विधाएँ पूर्णतः भिन्न हैं। वस्तुतः बूँद में सागर के दर्शन कराना कहानी कला का नाम है। जिसकी मूल आत्मा 'एक संवेदना अथवा एक प्रभाव' है। एच.जी. वेल्स ने कहानी को परिभाषित करते हुए लिखा है —

'Any piece of short fiction which can be read in twenty minutes would be a short story'.

SHOT ON MI
MI DUAL CAMERA
2020/4/25

'अर्थात कहानी एक ऐसा आख्यान है जो सिर्फ बीस मिनट में पढ़ा जा सके'। पाश्चात्य जगत मे कहानी के जन्मदाता एडगर एलन पो के शब्दों में – 'कहानी रसोद्रेक कराने वाला, अपने आप में पूर्ण, एक ऐसा असरदार आख्यान है जो एक ही बैठक में पढ़ा जा सके।'

आधुनिक हिन्दी लेखकों एवं समीक्षकों ने भी कहानी को परिभाषित किया है। मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार– "कहानी एक ऐसी रचना है जिससे जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है" वह एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप से दृष्टिगोचर होता है।

अज्ञेय के मतानुसार– "कहानी एक सूक्ष्मदर्शी यंत्र है जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के दृश्य खुलते है।"

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का प्रारम्भ लगभग सन् 1900 ई. से मानना उचित है क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में समीचीन कहानी कला का सूत्रपात नहीं हुआ था। हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी कौन सी है यह निर्धारण करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसके सन्दर्भ में कुछ कहानियों के नाम प्रस्तुत है→

1. रानी केतकी की कहानी (सन् 1803 ई.) – सैय्यद ईशा अल्ला खाँ
2. राजा भोज का सपना – राजा शिवप्रसाद सिंह
3. एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
4. इन्दुमती (सन 1900 ई.) – किशोरी लाल गोस्वामी
5. प्लेग की चुड़ैल (सन् 1902) – मास्टर भगवान दास
6. ग्यारह वर्ष का समय (1903) – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
7. दुलाई वाली (1903) – बंग महिला (श्रीमती राजेन्द्र बाला घोष)

यद्यपि हिन्दी में कहानी शब्द मात्र से ही कहानी का अर्थ [illegible] रानी केतकी की कहानी'

2020/4/20 19

हिन्दी की प्रथम मौलिक रचना मानी जा सकती है, किन्तु इसमें आधुनिक कहानी कला के सभी चीन गुण नहीं है। इसी प्रकार की कहानी 'राजाभोज का सपना' तथा 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न भी है।'

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'इन्दुमती' को ही हिन्दी की मौलिक रचना माना है। कालान्तर में उसके अमौलिक सिद्ध हो जाने पर स्वयं 'ग्यारह वर्ष का समय' नामक कहानी की रचना की तथा बंग महिला कृत 'दुलाई वाली' को प्रथम एवं द्वितीय कहानी होने का गौरव प्रदान किया।

हिन्दी की मौलिक कहानियों की परम्परा का आरम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा सम्पादित 'इन्दु' पत्रिका के प्रकाशन सन 1911 ई. से होता है। प्रसाद की सर्वप्रथम कहानी 'ग्राम' (1911) प्रकाशित हुई। सन 1911 ई. मे ही 'चन्द्रधनशर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'सुखमय जीवन' 'भारत मित्र' पत्रिका में प्रकाशित हुई। सन् 1911 ई. मे ही 'पिकनिक' नामक कहानी गंगा प्रसाद श्रीवास्तव की प्रकाशित हुई। ये तीनो लेखक कालान्तर में ही हिन्दी साहित्य के सुविख्यात लेखक हुए। गुलेरी जी की सुप्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' (1915) सरस्वती मे प्रकाशित हुई। 'उसने कहा था' नामक कहानी कथ्य और शिल्प दोनो ही दृष्टियों से श्रेष्ठ है, जिसका वर्ण्य विषय आदर्श प्रेम जो त्याग और बलिदान पर आधारित है। प्रेमचन्द सर्वप्रथम उर्दू कहानियों की रचना 'नवाबराय' के नाम से करते थे। उनकी प्रथम हिन्दी कहानी 'पंचपरमेश्वर' (1916 ई.) है। यही से हिन्दी कहानी का समुचित विकास प्रारम्भ हुआ।

इस समय भावनात्मक, यथार्थवादी, आदर्शवादी मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, पारिवारिक, हास्य व्यंग्य प्रधान सम्बन्धी आदि विषयो से संपृक्त कहानियाँ धडल्ले से प्रकाशित हो रही है, इस समय के महिला कहानीकारो ने आधुनिक नारी की ... [illegible] धातियों नौकरी पेशा

SHOT ON MI A2
MI DUAL CAMERA
2020/4/20

नारियों की समस्या, दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन के अनुभव आदि का चित्रण अपनी कहानियों में सफलता पूर्वक किया है। आज के वर्तमान युग में हिन्दी कहानी अपने चरमोत्कर्ष पर है।